SARAL HINDI VIGYAN

(GRAMMAR & COMPOSITION)

BOOK - 2

सरल

हिन्दी-विज्ञान

(व्याकरण तथा रचना)

पुस्तक 2

लेखक

प्रहलाद 'ठाकुर'

एम० ए०, (अंग्रेजी, इतिहास) प्रभाकर

साधना - लोक

श्रीनगर, काश्मीर.



शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
माव	भाब	५	६
वालों	वालों	७	४
करन	करने	१०	२
ग्रिन	जिन	१४	६
भड़िया	भेड़िया	१७	७
जानत	जानते	२७	१
अपन	अपने	२७	२
प्रयोक	प्रयोग	६०	४
अपादन	अपादान	७२	८
मेल स	मेल से	७६	४
वदल	बदल	८१	१७
वाक्य म	वाक्य में	८७	८
शव्दों	शब्दों	८८	६
वन	बन	९०	८
Exclamatary	Exclamatory	९१	२
शव्द	शब्द	९५	११
वाक्य है	वाक्य हैं	१०१	१०
करने वाली	करने वाला	१०६	२
विधय	विधेय	१०६	१४



विषय-सूची

(रचना-विभाग)



रचना - विभाग

****

पाठ 33

रचना

COMPOSITION

हम अपने मन के भाव तथा विचार भाषा के द्वारा प्रकट करते हैं। परन्तु—

ये भाव तथा विचार, हमारे हृदय में, अपने आप उत्पन्न नहीं होते, बल्कि किसी बात या विषय (Subject) को लेकर उत्पन्न होते हैं। याद रहें—

भावों का उदय किसी विषय के कारण ही होता है। जैसे—

जब हम किसी अन्धे भिखारी को देखतें हैं तो हमारे हृदय में उसके प्रति अनेक भाव उत्पन्न हो जाते हैं। यहां 'अन्धा भिखारी' हमारे उन भावों के उदय का कारण तथा विषय बना फिर—

उन भावों को हम भाषा के द्वारा व्यक्त करते हैं। अतः —

व्यक्तिकरण के लिए विषय, भाव तथा भाषा का होना आवश्यक है।

जब हम किसी विषय को लेकर अपने भावों को व्यक्त करने के लिए भाषा का जो रूप (Form) निर्मित करते हैं, उसे रचना कहते हैं। अर्थात्—

किसी विषय को लेकर मन के भाव तथा विचार प्रकट करने के लिये भाषा के जिस रूप का प्रयोग किया जाता है, उसे 'रचना' कहते हैं। याद रहे—

'रचना' में भाषा का रूप (Form) ही होता है। और—

प्रत्येक 'रचना' में नीचे लिखी तीन बातों का होना आवश्यक है :-

1. विषय	Subject
2. भाव	Ideas
3. भाषा	Language

भाषा के दो रूप होते हैं: —

1. गद्य	Prose
2. पद्य	Poetry or Verse

1. 'गद्य' बोलचाल की भाषा है।
2. 'पद्य' कविता की भाषा है।

'रचना' गद्य और पद्य दोनों में हो सकती है। याद रहे— सुन्दर रचना अभ्यास से बनती है।

प्रश्न

I हमारे हृदय में भावों का उदय कैसे होता है ? उदाहरण दो ।

II. 'रचना' किसे कहते हैं ?

III. व्यक्तिकरण तथा रचना में किन बातों का होना आवश्यक है ? उनके नाम बताओ ।



पाठ 34

शैली

STYLE

शैली का अर्थ है—ढंग अर्थात् तरीका ।

हम जानते हैं कि भाषा वाक्यों से बनती है । परन्तु—

जिस प्रकार केवल शब्द-समूह वाक्य नहीं कहलाता; उसमें शब्दों का एक विशेष-क्रम तथा रूप होता है; उसी प्रकार केवल वाक्यों का समूह भाषा नहीं कहलाती । उसमें भी वाक्यों का एक खास क्रम व रूप होता है । याद रहे—

भाषा में वाक्यों का यह क्रम व रूप भाव तथा विचारों के अनुसार होता है । जैसे-जैसे भाव तथा विचार आते-जाते हैं । वाक्य भी उसी प्रकार आते जाते हैं । जहां भाव तथा विचारों का सिलसिला टूट जाता है, भाषा अस्पष्ट और असुन्दर (भद्दी) बन जाती है । अतः —

भाषा का प्रवाह भाव तथा विचार-धारा पर निर्भर है ।

यदि भावों का प्रवाह ठीक रहा तो भाषा का प्रवाह भी ठीक रहेगा । और—

यदि भावों का प्रवाह ठीक न रहा तो भाषा का प्रवाह भी ठीक न रहेगा ।

जब भाषा का प्रवाह ठीक न रहा तो भाषा की सुन्दरता जाती रहती है । वह अस्पष्ट और भद्दी बन जाती है । अत:—

सुन्दर भाषा के लिए भाषा का उचित प्रवाह होना आवश्यक है । और—

भाषा का यह प्रवाह भाव तथा विचार-प्रवाह पर निर्भर है; अर्थात् भाव तथा विचारों का सिलसिला टूटना नहीं चाहिये । याद रहे—

हमारे लिखने, पढ़ने तथा बोलने का एक खास ढंग है । अत: —

जिस ढंग से हम अपने मन के भाव तथा विचार प्रकट करते हैं, उस ढंग को 'पद्धति' या 'शैली' कहते हैं । अर्थात्—

भाव तथा विचार प्रकट करने के लिये भाषा का प्रयोग जिस ढंग से किया जाता है, उसे 'रचना-शैली' कहते हैं । याद रहे—

'शैली' भाव और भाषा के विशेष प्रवाह से बनती है । अत: —

भाव और भाषा का घनिष्ट सम्बन्ध है । और—

प्रत्येक लेखक की अपनी एक शैली होती है । 'शैली' से ही लेखक पहिचान लिया जाता है ।

प्रश्न

I. भाषा किसे कहते हैं ? उसकी पहिचान क्या है ?

II. भाषा में वाक्यों का क्रम व रूप किसके अनुसार होता है बताओ।

III. भाषा का प्रवाह किस पर निर्भर है ? समझाकर लिखो ।

IV. भाषा का प्रवाह ठीक न रहने पर उसमें क्या कमी हो जाती है ? लिखो ।

V. शैली किसे कहते हैं ?

VI. शैली कैसे बनती है ?

VII. लेखक कैसे पहिचाना जाता है ?



गद्य-रचना

××××××××

पाठ 35

गद्य

PROSE

'गद्य' बोलचाल की भाषा है और यह व्याकरण के नियमों से बंधी होती है । अर्थात्—

भाषा के जिस रूप को हम अपने बोलचाल में प्रयोग करते हैं और जो व्याकरण के नियमों से शुद्ध एवं परिमार्जित होता है, उसे 'गद्य' कहते हैं । जैसे—

ताजमहल सारा सफेद संगमरमर का बना हुआ है और दुनिया की शानदार इमारतों में से एक है । यह शानदार मकबरा शाहजहां ने अपनी बेगम मुमताजमहल की यादगार में बनाया ।

यह 'गद्य' का एक नमूना है । याद रहे—

'गद्य' के द्वारा हम अपने भाव तथा विचारों को आसानी से प्रकट कर सकते हैं, क्योंकि यह बोलचाल की भाषा है ।

प्रश्न

I. भाषा किसे कहते हैं ? उसकी पहिचान क्या है ?

II. भाषा में वाक्यों का क्रम व रूप किसके अनुसार होता है बताओ।

III. भाषा का प्रवाह किस पर निर्भर है ? समझाकर लिखो।

IV. भाषा का प्रवाह ठीक न रहने पर उसमें क्या कमी हो जाती है ? लिखो।

V. शैली किसे कहते हैं ?

VI. शैली कैसे बनती है ?

VII. लेखक कैसे पहिचाना जाता है ?



गद्य-रचना

xxxxxxxx

पाठ 35

गद्य

PROSE

'गद्य' बोलचाल की भाषा है और यह व्याकरण के नियमों से बंधी होती है । अर्थात्—

भाषा के जिस रूप को हम अपने बोलचाल में प्रयोग करते हैं और जो व्याकरण के नियमों से शुद्ध एवं परिमार्जित होता है, उसे 'गद्य' कहते हैं । जैसे—

ताजमहल सारा सफेद संगमरमर का बना हुआ है और दुनिया की शानदार इमारतों में से एक है। यह शानदार मकबरा शाहजहां ने अपनी बेगम मुमताजमहल की यादगार में बनाया ।

यह 'गद्य' का एक नमूना है । याद रहे—

'गद्य' के द्वारा हम अपने भाव तथा विचारों को आसानी से प्रकट कर सकते हैं, क्योंकि यह बोलचाल की भाषा है ।

लेकिन–

मन के भाव तथा विचार प्रकट करने के लिए भाषा का प्रयोग कई प्रकार से किया जाता है। अर्थात्–

भाव तथा विचार व्यक्त करने के लिए भाषा का जो रूप निर्मित किया जाता है, वह कई प्रकार का है।

भाषा का वह विशेष-रूप 'रचना का अंग' कहलाता है। याद रहे—

रचना के ये अंग अधिकतर विषय के अनुसार ही निर्धारित होते हैं। अर्थात्—

किस विषय के लिये रचना का कौनसा अंग अधिक उपयुक्त होगा, इसका निर्णय अधिकतर उस विषय के अनुसार ही होता है।

ऐसा करने से रचना में एक प्रकार की शक्ति आ जाती है और वह प्रभाव युक्त बन जाती है। और—

ऐसा न करने से रचना में एक प्रकार की शिथिलता आ जाती है और वह प्रभावहीन बन जाती है। फिर भी–

किस विषय के लिये रचना का कौन सा अंग अधिक उपयुक्त होगा, यह कहना अत्यन्त कठिन है। इस बात का निर्णय लेखक स्वयं ही सोचकर कर लेता है। यह उसी का काम है।

गद्य-रचना के कुछ प्रमुख अंग ये हैं :—

1. सम्वाद	Dialogue
2. पत्र	Letter
3. कहानी	Story
4. प्रस्ताव या निबन्ध	Essay

प्रश्न

I. गद्य किसे कहते हैं ? उदाहरण दो।

II. 'रचना के अंग' से क्या तात्पर्य है ?

III. कौन सा 'अंग' किस विषय के लिये उपयुक्त है, यह कैसे जान सकते हैं ? उससे क्या लाभ है ?

IV. गद्य-रचना के प्रमुख अंग कौन से हैं ? उनके नाम बताओ।



पाठ 36

सम्वाद

DIALOGUE

सम्वाद का अर्थ है—वार्तालाप या बातचीत ।

जब दो या दो से अधिक मनुष्य अपने मनके भाव तथा विचार बातचीत के द्वारा, एक दूसरे पर, प्रकट करते हैं तो उसे 'सम्वाद' कहते हैं ।

बातचीत करना मनुष्य की स्वाभाविक देन है ।

यों तो अकेला मनुष्य भी बहुधा अकेलेपन में अपने मनसे बातें किया करता है । परन्तु इसे हम बातचीत या वार्तालाप नहीं कह सकते । इसे हम केवल 'सोचना' कह सकते हैं, क्योंकि मनुष्य के हृदय में कितने ही भावों का उदय होता है और उन भावों का समाधान वह अपनी बुद्धि के द्वारा किया करता है । अतः ऐसी अवस्था को हम केवल 'सोचने' का नाम दे सकते है, बातचीत या वार्तालाप का नहीं ।

हम बहुधा देखते हैं कि जब कभी दो या चार बालक या व्यक्ति इकट्ठे हो जाते हैं तो उनके बीच बातों का सिल-

सिला शुरू हो जाता है। यह स्वाभाविक है, क्योंकि बातचीत के द्वारा ही वे अपने मनके भाव तथा विचार प्रकट करने में समर्थ होते हैं।

याद रहे—

'बातचीत' तभी सम्भव है जब दो या दो से अधिक व्यक्ति हों और वे एक दूसरे के पास अथवा सन्मुख हों।

बातचीत केवल बोलकर ही की जाती है, अतः बातचीत में 'बोली' का विशेष महत्व है। परन्तु—

'सम्वाद' बोलने के अतिरिक्त लिखे और पढ़े भी जाते हैं। अतः सम्वाद में 'भाषा' का विशेष महत्व है। इसलिए हम कह सकते हैं कि—

जिस प्रकार 'बोली' का ही विकसित रूप 'भाषा' कहलाता है, उसी प्रकार 'बातचीत' का ही विकसित रूप 'सम्वाद कहलाता है।

'बातचीत' करना आसान है, क्योंकि यह स्वाभाविक है। परन्तु 'सम्वाद' लिखना उतना आसान नहीं जितना हमें दिखाई देता है, क्योंकि सम्वाद लिखना स्वाभाविक चीज नहीं। यह सीखने और अभ्यास की चीज है।

बहुधा हम देखते हैं कि मनुष्य जब एक दूसरे से मिलते हैं तो कुछ ही समय में उनके बीच, अनेक विषयों पर, कितनी ही नई पुरानी बातें हो जाती हैं; और बातचीत की समाप्ति

पर उन्हें कुछ भी याद नहीं रहता कि किन-किन विषयों पर क्या-क्या बातें हुई । ऐसी बातचीत का न कोई क्रम होता हैं और न कोई उद्देश्य ही । ऐसी बातचीत को हम इधर-उधर की 'गपशप' कह सकते हैं, क्योंकि ये केवल दिल बहलाव तथा समय व्यतीत करने के लिए की जाती हैं । परन्तु—

सम्वाद के विषय में ऐसा नहीं पाया जाता । सम्वाद का कुछ उद्देश्य होता है और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही सम्वाद लिखे जाते हैं । इसके अतिरिक्त उनमें कुछ क्रम अथवा सिलसिला पाया जाता है ।

सम्वाद लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :—

1. सम्वाद का उद्देश्य ।
2. सम्वाद में बातों का क्रम ।
3. सम्वाद की भाषा सरल तथा सरस ।
4. सम्वाद की भाषा पात्रों के अनुसार ।
5. सम्वाद की भाषा के द्वारा पात्रों के चरित्र पर प्रकाश ।
6. सम्वाद में एक प्रकार का वातावरण ।

1. सम्वाद लिखते समय हमें यह देखना चाहिए कि उसका उद्देश्य क्या है ?

उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए यदि हम सम्वाद लिखेंगे तो वे अच्छे और मनोरंजक होंगे । निरुद्देश्य सम्वाद

फीके और भद्दे बन जाते हैं ।

साथ ही हमें यह भी देख लेना चाहिये कि हमारे लिखे हुए सम्वाद उद्देश्य की पूर्ति करते हैं या नहीं । यदि वे उद्देश्य की पूर्ति नहीं करते तो वे अच्छे सम्बाद नहीं कहे जा सकते ।

2. सम्वाद में बातों का क्रम यानी सिलसिला इस प्रकार से हो जिससे कहानी आगे बढ़ती जाय और उससे अपने उद्देश्य की पूर्ति हो ।

बातों का क्रम तभी अच्छा कहा जा सकता है जब कोई भी बात व्यर्थ नहीं कही गई हो; वह बार-बार नहीं दुहराई गई हो, तथा कही हुई बात से उद्देश्य पर क्रमशः प्रकाश पड़ता जाय अर्थात् बात स्पष्ट होती जाय ।

जिन सम्वादों में बातों का यह उचित क्रम पाया जाता है, वे सम्वाद रुचिकर बन जाते हैं और जिनमें यह क्रम नहीं पाया जाता है, वे अरुचिकर बन जाते हैं ।

3. सम्वाद की भाषा हमेशा सरल तथा सरस होनी चाहिए ।

सम्वाद की भाषा सरल तथा सरस तभी बन सकती है जब वाक्य छोटे-छोटे हों । लम्बे-लम्बे वाक्य अधिकतर भाषा की सुन्दरता खो देते हैं । छोटे-छोटे वाक्यों से ही भाषा की सुन्दरता बनी रहती है और बोलने तथा पढ़ने में एक

प्रकार की चुस्ती-सी आ जाती है; उनमें शिथिलता अथवा ढीलापन नहीं आ पाता ।

4. सम्वाद की भाषा पात्र के अनुसार होनी चाहिये । अर्थात्—

बोलने वाले व्यक्ति जिस प्रकार के हों, भाषा उन्हीं के अनुसार होनी चाहिए । जैसे—

बच्चों की भाषा बच्चों जैसी होनी चाहिए; युवकों की युवकों जैसी और बुजुर्गों की बुजुर्गों जैसी । स्वामी की भाषा स्वामी जैसी और सेवक की सेवक जैसी । पढ़े-लिखों की भाषा पढ़े लिखों जैसी होनी चाहिए और अनपढ़ों की अनपढ़ जैसी ।

ऐसा करने से सम्वाद में एक प्रकार की स्वाभाविकता आ जाती है अन्यथा वे अस्वाभाविक बन जायेंगे, उनमें भद्दापन आ जायगा और लोग उन्हें पढ़कर हंसेगें ।

5. सम्वाद की भाषा तथा उसका रूप इस प्रकार का होना चाहिए जिससे पात्रों के चरित्र पर प्रकाश पड़ सके । अर्थात्—

उनकी बातों से हम यह जान सकें कि अमुक पात्र अथवा बातचीत करने वाला व्यक्ति किस प्रकार का है । वह बुद्धिमान है अथवा मूर्ख; चालाक है या बुद्धू-आदि । यह स्वाभाविक है कि जैसा पात्र होगा, उसकी बातचीत का ढंग भी

उसी प्रकार का होगा । एक बुद्धिमान मनुष्य बुद्धिमानों जैसी बातें करेगा और एक मूर्ख मूर्खों जैसी । याद रहे—

वही 'सम्वाद' अच्छे कहे जा सकते हैं जिनसे पात्रों के चरित्र-चित्रण पर प्रकाश पड़ सके ।

6. सम्वाद में वातावरण का खास ध्यान रखना चाहिए ।

वातावरण का सम्बन्ध भाव तथा विचार धारा से है। पढ़ते समय जब हमारे हृदय में कोई भाव उत्पन्न हो जाते हैं और आदि से अन्त तक, किसी न किसी रूप में, वे बने रहते है तो उनसे एक प्रकार का वातावरण (Atmosphere) बन जाता है । अर्थात्—

उन भावों के बने रहने का ही दूसरा नाम 'वातावरण' है ।

जब किसी सम्वाद में अमुक भाव, आदि से अन्त तक किसी न किसी रूप में नहीं बने रहते हैं तो 'वातावरण' की सृष्टि नहीं हो पाती । और वातावरण की सृष्टि न होने के कारण सम्वाद में एक प्रकार से फीकापन पैदा हो जाता है। कहानी फीकी (Dull) पड़ जाती है और वह अपने उद्देश्य की ओर नहीं बढ़ पाती । अतः—

सम्वाद में भावों का बने रहना तथा वातावरण का

होना अति आवश्यक है। और यह तभी सम्भव है जब उद्देश्य तथा अन्य बातों को ध्यान में रखते हुए सम्वाद लिखे जायं।

ऊपर लिखी बातों से स्पष्ट है कि 'सम्वाद' में एक खास क्रम, उद्देश्य तथा वातावरण आदि पाया जाता है और 'बातचीत' में बहुधा इनका अभाव। यही 'सम्वाद' और 'बातचीत' में अन्तर है। लेकिन याद रहे—

यद्यपि 'बातचीत' और 'सम्वाद' में बहुत अन्तर है, परन्तु फिर भी उत्तम सम्वाद वही कहे जा सकते हैं जो स्वाभाविक बातचीत से बहुत मिलते-जुलते हों—बातचीत के बहुत पास हों अर्थात् सम्वाद बिलकुल स्वाभाविक बातचीत जैसे मालूम हों। जैसे—

दो मित्र

द्रोण –अरे यार, माधव! तुमने मेरा सारा खेल बिगाड़ दिया।

माधव–क्यों? क्या हुआ?

द्रोण –हुआ क्या? बिचारी चिड़ियां दाना चुग रहीं थीं, जैसे ही तुम आए, डर के मारे सब की सब उड़ गईं।

माधव–अरे भाई, द्रोण! यह तो बताओ कि तुम यहां बैठे-बैठे क्या कर रहे हो?

द्रोण –गुरुजी की आज्ञा है कि चिड़ियों से फलों की हानि न होने पावे, इसलिए उनकी रखवाली कर रहा हूं।

माधव –बड़ी अच्छी रखवाली कर रहे हो, यार मेरे ? तुमने तो, चिड़ियों को भगाने के बजाए, उन्हें और इकट्ठा कर, एक खासा चिड़ियाघर बना रखा था ।

द्रोण –तो इसमें हर्ज ही क्या ? मैंने उन्हें दाना डालकर अपने पास बुला लिया । एक पन्थ दो काज । फलों का नुक्सान भी न हो और अपना इन रंग बिरंगी, प्यारी प्यारी चिड़ियों के संग खेलकर दिल भी बहल जाय ।

माधव –भाई, तुमने तरकीब तो खूब मजेदार ढूंढ़ निकाली ।

द्रोण –भला, तुम्हीं बताओ, माधव ! पत्थर मारकर इन बिचारियों को भगा देना कितना जुल्म है ! ये किसी का कुछ बिगाड़ती नहीं, सिर्फ अपना दाना चुगती हैं ! ये कुदरत की देन हैं । हम इन्हें क्यों न प्यार करें ।

माधव –तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है, द्रोण । बेगुनाहों को सताना पाप है ।

——

याद रहे—

अच्छे 'सम्वाद' अभ्यास से आते हैं । सम्वाद लिखते समय हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि अमुक विषय, बात या घटना पर, एक विशेष परिस्थिति में, अमुक पात्र क्या सोचते हैं । क्योंकि जो वे सोचते हैं वही अपने भाव

तथा विचारों के रूप में प्रकट करते हैं। इतना समझ लेने के बाद लिखने का अभ्यास करना चाहिए । और—

अच्छे सम्वादों के नमूने प्राय: नाटक तथा कहानी की पुस्तकों में मिल जाते हैं । उनसे भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है ।

प्रश्न

I. सम्वाद किसे कहते हैं ? समझाकर लिखो ।

II. बातचीत और सम्वाद में क्या अन्तर है ? समझाकर लिखो ।

III. सम्वाद लिखते समय हमें किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ? समझाकर लिखो ।

IV. कोई उचित बिषय को चुनकर निम्नलिखित पात्रों के बीच सम्वाद लिखो :–

1. मरीज और डॉक्टर ।
2. हीरा और कोयला ।
3. कलम और तलवार ।
4. बालक और भिखारी ।
5. बालक और खिलौनेवाला ।



पाठ 37

पत्र

LETTER

जब मनुष्य एक दूसरे से बहुत दूर हों—जैसे परदेश में-तो पत्र के द्वारा मन के भाव तथा विचार प्रकट किए जाते हैं । अर्थात्—

अधिक दूरी होने के कारण, जब मनुष्य एक दूसरे की आवाज नहीं सुन सकते, तो 'पत्र' बातचीत का एक प्रमुख साधन बन जाता है । लेकिन—

यह बातचीत एक तरफा होती है, अर्थात् जो कुछ कहना होता है एक ही बार कह या लिख दिया जाता है, और उसी प्रकार उसका उत्तर भी दे दिया जाता है । याद रहे—

'पत्र' सम्वाद का रूप धारण नहीं कर पाता ।

पहले जमाने में जब लिखने की कला नहीं थी या बहुत कम थी तो समाचार प्रायः किसी व्यक्ति के द्वारा भेजे जाते थे । सन्देश ले जाने वाला व्यक्ति इतना चतुर होता था कि वह सन्देश उसी भाषा में उसी भाव में-पहुँचा देता था

और इस प्रकार उद्देश्य पूरा हो जाता था । आज भी गांवों में समाचार भेजने की यह रीति प्रचलित है । आने-जाने वाला व्यक्ति ही अक्सर समाचार ले जाता है । परन्तु—

आज के समय में–जब कि रेल, मोटर, जहाज, हवाई जहाज आदि के होने के कारण-यातायात बहुत ही सुविधाजनक सुगम और शीघ्र बन गया है—समाचार भेजना अति सुगम हो गया है । समाचार ले जाने का कार्य अमुक व्यक्ति के बजाए अब एक संस्था के द्वारा होता है । यह संस्था 'डाक-तार-विभाग' के नाम से प्रसिद्ध है, जिसका संचालन देश की सरकार द्वारा होता है । और समाचार अधिकतर 'पत्रों' द्वारा ही भेजे जाते हैं ।

पत्र लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिये :—

1. क्योंकि पत्र बातचीत का प्रमुख साधन है, अतः पत्र की भाषा सरल तथा बातचीत की भाषा होनी चाहिए । अर्थात्—

पत्र में सरल बातचीत की भाषा का ही प्रयोग किया जाता है ।

2. क्योंकि यह बातचीत एकतरफा होती है–अर्थात्. जो कुछ कहना होता है, एक बार ही कह या लिख दिया जाता है, अतः लिखते समय हमें बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिये । अर्थात्—

कोई भी बात बार बार न दुहराई जाय कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक बात कहने का प्रयत्न करना चाहियें।

3. पत्र पढ़ने वाले को एक ही नजर में यह स्पष्ट हो जाय कि पत्र—कहां से आया है ? कब लिखा गया था ? किसे लिखा गया है ? क्या लिखा हुआ है ? और लिखने वाला कौन है ? —आदि।

कौन सा पत्र कैसे लिखना चाहिये इसका अपना एक ढंग यानी तरीका है। जिस ढंग से जो पत्र लिखा जाता है, उसके अनुसार पत्र का वर्गीकरण किया गया है। पत्रों को मुख्यत: तीन वर्गों में विभक्त किया गया है, अर्थात् पत्र तीन प्रकार के माने गये हैं। वे ये हैं :—

1. निजि	Personal
2. व्यावसायिक	Business
3. कार्यालयीन	Official

1. जो पत्र अपने सम्बन्धियों, मित्रों आदि को लिखे जाते हैं, उन्हें 'निजि पत्र' कहते हैं।

2. जो पत्र व्यापार अर्थात् व्यवसाय सम्बन्धी लिखे जाते हैं, उन्हें 'व्यवसायिक पत्र' कहते हैं।

3. जो पत्र कार्यालय अर्थात् दफ्तर सम्बन्धी लिखे जाते हैं, उन्हें 'कार्यालयीन पत्र' कहते हैं।

प्रत्यक पत्र एक खास ढंग से लिखा जाता है। अतः पत्र लिखने के कुछ नियम बने हैं। उन नियमों के अनुसार 'पत्र' को कुछ 'भागों' में विभक्त कर दिया गया है। वे भाग पत्र के 'अंग' (Parts) कहलाते हैं। पत्र के मुख्य 'अंग' ये हैं :—

1. स्थान और तिथि—

   जहां से और जब पत्र लिखा जाय।

2. प्रशस्ति अर्थात् सम्बोधन—

   जिसको सम्बोधन कर पत्र लिखा जाय।

3. पत्र का कलेवर—

   जो बात लिखनी हो।

4. समाप्ति—

   पत्र भेजने वाले का नाम।

5. पता—

   जिसे और जहां पत्र भेजना हो।

ये पांच बातें कहां और कैसे लिखनी चाहिए—यह आगे लिखे पत्रों से स्पष्ट हो जायगा।

———

1. निजि पत्र

माता तथा पिता को

27, जूना शहर
बड़नगर
दिनांक 25-1-61

पूज्य माताजी / पिताजी,

सादर चरण स्पर्श !

आपका प्यारा पत्र मिला। यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि चुन्नू छः माही परीक्षा में, अपनी श्रेणी में, प्रथम रहा। फरवरी माह में होने वाली 'स्काउट-रैली' में सम्मिलित होने में अपनी स्कूल स्काउट पार्टी के साथ बंगलोर जा रहा हूं। मैं यहां प्रसन्न हूं। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें।

शेष कुशल। चुन्नू को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
नरेन्द्र कुमार

याद रहे—

1. अपने से बड़ों को, अर्थात् गुरुजनों को प्रशस्ति में

'पूज्य व आदरणीय' तथा 'सादर चरण स्पर्श व सादर प्रणाम' और समाप्ति में–'आपका आज्ञाकारी'–आदि सम्मान सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

2. अपने से बराबर वालों को प्रशस्ति में—'प्रिय' तथा 'सप्रेम वन्दे' और समाप्ति में–'तुम्हारा प्रिय……' आदि प्रेम-सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

3. अपने से छोटों की प्रशस्ति में–'चिरंजीव व प्रिय' तथा 'आशीर्वाद व प्यार' और समाप्ति में–'तुम्हारा प्यारा' –आदि आशीर्वाद व प्यार-सूचक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

2. व्यावसायिक पत्र

पुस्तक विक्रेता को

45, आर्य नगर

मुरार

सितम्बर 18, 1961

सेवा में—

मैनेजर

हिन्दी-भवन

दिल्ली ।

प्रिय महोदय,

व्ही. पी. द्वारा नीचे लिखी पुस्तकें शीघ्र भेजने की कृपा करें । 5/- रु. मनी-ऑर्डर / पोस्टल-ऑर्डर द्वारा भेज रहा हूं ।

1. गोदान — प्रेमचन्द
2. भारत का इतिहास — डॉ. ईश्वरी प्रसाद
3. गणित — चक्रवर्ती

c/o श्री गजानन आप्टे
एडवोकेट
45, आर्य नगर
मुरार (मध्य प्रदेश)

भवदीय
सदाशिव आप्टे

याद रहे—

व्यावसायिक पत्र जितने छोटे हों उतने अच्छे रहते हैं । केवल काम की बातें ही लिखी जानी चाहिये—और भाषा शिष्ट अर्थात् सभ्यतापूर्ण हो ।

——

3. कार्यालयीन पत्र

प्रधानाध्यापक को

28, नरवीर तानाजी बाड़ी
पूना
फरवरी 7, 1961

सेवा में—

प्रधानाध्यापक
नव भारत हाई स्कूल
पूना

आदरणीय महोदय,

निवेदन है कि मुझे कल से ज्वर हो आया है। अतः तीन दिन की मुझे छुट्टी देने की कृपा करें।

आपका आज्ञाकारी विद्यार्थी
गोपाल गोखले
कक्षा 8

याद रहे—

कार्यालयीन पत्र अधिकतर प्रार्थना-पत्र के रूप में ही होते हैं। और—

ये पत्र भी जितने छोटे हों उतने ही अच्छे रहते हैं। काम की ही बातें लिखी जानी चाहिए, निरर्थक बिलकुल नहीं। भाषा शिष्ट एवं सभ्यतापूर्ण हो।

पता इस प्रकार लिखा जाता है :—

श्री जगदीश चन्द्र कपूर
107, नवापुरा
बड़ौदा (गुजरात)

प्रश्न

I. जब मनुष्य एक दूसरे से बहुत दूर हों—जैसे परदेश में—तो किसके द्वारा मन के भाव तथा विचार प्रकट किये जाते हैं ? लिखो।

II. पत्र क्या है ? समझा कर लिखो।

III. पहले जमाने में जब लिखने की कला नहीं थी या बहुत कम थी तो समाचार किसके द्वारा भेजे जाते थे ? और

आजकल समाचार कैसे भेजे जाते हैं ? समझा कर लिखो ।

IV. पत्र लिखते समय हमें किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ? समझाकर लिखो ।

V. पत्र कितने प्रकार के हैं ? उनका वर्गीकरण किसके आधार पर किया गया है ? आदि समझाकर लिखो ।

VI. पत्र के मुख्य अंग कितने हैं ? वे कौन-कौन से हैं ? प्रत्येक के नाम लिखो तथा उन्हें समझाओ ।

VII. उचित विषयों को चुनकर निम्नलिखित व्यक्तियों को पत्र लिखो :—

1. अपने चाचाजी को ।
2. अपने भाई तथा बहिन को ।
3. अपने मित्र को ।
4. किसी पुस्तक विक्रेता को ।
5. अपने अध्यापक तथा प्रधानाध्यापक को ।
6. किसी क्रिकेट, हॉकी आदि टीम के कप्तान को ।



पाठ 38

कहानी

STORY

जब मनुष्य जीवन की कोई मनोरंजक घटना या बात देखता या सुनता है तो उससे प्रभावित होकर वह उस घटना या बात को आदि से अन्त तक, एक खास ढंग से, वर्णन या चित्रित करता है, उसे 'कहानी' कहते हैं ।

'कहानी' कही जाती है इसलिए वह 'कहानी' कहलाती है।

पहले 'कहानी' कही जाती थी और सुनी जाती थी। और–

अब 'कहानी' कहने और सुनने के अतिरिक्त लिखी और पढ़ी भी जाती है ।

'कहानी' कहने और सुनने की प्रथा बहुत प्राचीन है प्राचीन समय में जब मनुष्य लिख और पढ़ नहीं सकता था तब भी वह 'कहानी' कह और सुनकर अपना मनोरंजन किया करता था। बच्चे कहानी कहने और सुनने के बड़े शौकीन होते हैं । बहुधा उन की माताएं, दादियां, नानियां आदि कहानी कह कर उनका दिल

बहलाया करती हैं । यही नहीं, गांव के अनपढ़ लोग भी बहुधा गांव की चौपालों में या घरों के आंगन में जमा होकर बड़ी मनोरंजक कहानियां कहते और सुनते पाए जाते हैं । आज भी जब शिक्षा का इतना विकास हो चुका है और हो रहा है, कहानी दिन प्रति दिन लोकप्रिय बनती जा रही है ।

ज्यों-ज्यों मानव सभ्यता का विकास होता गया, कहानी का भी विकास होता गया ।

प्राचीन समय में कहानी अधिकतर पशु-पक्षियों, परियों, दानवों तथा भूत-प्रेत आदि पर रची जाती थी । ऐसी कहानियां आज भी बच्चों तथा अनपढ़ों में प्रचलित हैं । ऐसी कहानियों से केवल मनोरंजन होता है, उनका और कोई उद्देश्य विशेषकर, नहीं होता ।

मध्य-युग में आकर कहानी का कुछ और विकास हुआ । जब धर्म का प्रचार विश्व में शनैः शनैः होने लगा तो धार्मिक नेताओं ने उन प्रचलित कहानियों के द्वारा लोगों को उपदेश देने का काम लेना आरम्भ किया, ताकि उनके धर्म का प्रचार अधिक हो । उन कहानियों के द्वारा मनोरंजन भी होता था और उपदेश भी । एक पंथ दो काज । ऐसी उपदेशप्रद कहानियां विश्व की अनेक धार्मिक पुस्तकों में पाई जाती हैं । उदाहरण के तौर पर 'जातक' की कहानियां, जो बौद्धमत से सम्बन्धित हैं, हमें आज भी मिलती हैं ।

आधुनिक युग में आकर कहानी का बहुत अधिक विकास

हुआ । विकास ही नहीं, उसका स्वरूप ही बदल गया । प्राचीन और मध्य-युग में 'कहानी बहुधा मानव जीवन से नहीं ली जाती थी । परन्तु अब लगभग सब कहानियां मानव-जीवन से ली जाती हैं । वे मानव-जीवन की कहानियां हैं, पशु-पक्षी या भूत-प्रेत आदि की नहीं । अतः—

हम देख चुके हैं कि 'कहानी' प्राचीन समय से ही मानव को बहुत प्रिय रही है; उसका मन लुभाती रही हैं ; और उसकी यह लोकप्रियता दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही है ।

'कहानी' कहना या लिखना आसान काम नहीं है जैसा कि हमें मालूम होता है । यह एक कला है । अन्य कला की भांति यह भी एक स्वाभाविक देन(Nature's gift) है, जो अभ्यास के द्वारा विकसित होती है । फिर भी कहानी कहने तथा लिखने के अपने नियम हैं ।

कहानी के प्रमुख पांच अंग हैं:—

1. शीर्षक Title or Heading
2. कथा-वस्तु Theme or Subject matter
3. कथोपकथन Plot
4. पात्र Characters
5. उद्देश्य Purpose

1. कहानी का नाम 'शीर्षक' कहलाता है । जैसे 'लालची कुत्ता' आदि । याद रहे—

वही 'शीर्षक' अच्छा माना जाता है जिससे कहानी पर

पूरा प्रकाश पड़े । जिस 'शीर्षक' से कहानी पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता वह ठीक नहीं माना जाता । अतः--

कहानी का 'शीर्षक' बड़ी सावधानी से चुनना चाहिये । 'शीर्षक' बहुधा 'उद्देश्य' को ध्यान में रखते हुए चुना जाता है । वह उद्देश्य के बहुत समीप होता है ।

2. 'कथा-वस्तु' कहानी का संक्षिप्त यानी सार है । जैसे--

एक लालची कुत्ता कहीं से रोटी का टुकड़ा उठा एक नाले को पार कर रहा था । पानी में अपनी परछाई देखकर सोचा-दूसरा कुत्ता है । उससे रोटी छीन लूँ । वह भौंका रोटी पानी में गिर पड़ी ।

यह लालची कुत्ते की कहानी का केवल संक्षिप्त यानी सार है--पूरी कहानी नहीं । अतः यह उसकी कथा-वस्तु है ।

3. कहानी का ढांचा अर्थात् कलेवर कहानी का 'कथोप कथन' यानी 'प्लॉट' कहलाता है ।

'कथोपकथन' एक प्रकार से 'कथावस्तु' का ही क्रमवद्ध विस्तार है । कहानी लिखने से पहले हम उसका एक क्रमवद्ध ढांचा तैयार कर लेते हैं । अर्थात् कहानी की अमुक-अमुक घटनाओं को चुनकर, उन्हें यथा स्थान रख, एक खाका तय्यार कर लेते हैं । यही खाका कहानी का ढांचा अर्थात् कलेवर बन जाता है जो उसका कथोपकथन' कहलाता है । जैसे--

1. किसी कुत्ते को एक रोटी का टुकड़ा कहीं से मिलना– 2. उसे उठाकर कहीं एकांत में खाने के लिये जाना– 3. मार्ग में एक नाले का पड़ना और पुल पर से अपनी परछाईं देखना—4. परछाईं वाले कुत्ते के मुंह में रोटी देख लालच आना– 5. रोटी छीनने के लिये भोंकना–साथ ही रोटी का पानी में गिर पड़ना ।

यह लालची कुत्ते की कहानी का 'कथोपकथन' यानी 'प्लाट' है । इसमें कहानी की खास-खास घटनाओं को चुनकर एक खास क्रम से रख दी गई है । ऐसा करने से कहानी का एक प्रकार से ढांचा तय्यार हो गया । याद रहे—

इसी ढांचे के आधार पर कहानी लिखी जाती है । और जिस ढंग से जो कहानी लिखी जाती है उसी के अनुसार उस कहानी का ढांचा यानी 'कथोपकथन' तय्यार किया जाता है ।

4. कहानी में 'पात्र' (Persons or Characters) अवश्य होते हैं । बिना पात्र के कोई कहानी नहीं बन सकती । जैसे–उपर्युक्त कहानी में 'कुत्ता' पात्र है अतः—

जिसको लेकर अथवा जिसके बारे में कहानी कही या लिखी जाती है, उसे 'पात्र' कहते हैं ।

कहानी में एक या एक से अधिक 'पात्र' हो सकते हैं । परन्तु, जिसको लेकर कहानी चलती है वह 'मुख्य पात्र' कहलाता

है, शेष उसके 'सहायक पात्र'। कहानी में एक या कभी-कभी दो मुख्य पात्र होते हैं।

5. कहानीकार अपनी कहानी के द्वारा पाठकों को कुछ कहना चाहता है। जो वह कहना चाहता है वही कहानी का 'उद्देश्य' कहलाता है। जैसे––

लालची कुत्ते की कहानी में कहानीकार यह बताना चाहता है कि 'लालच' करना बुरा है–उससे कोई फायदा नहीं'–और यही उस कहानी का 'उद्देश्य' भी है। याद रहे–

बिना 'उद्देश्य' के कहानी नीरस तथा फीकी लगती है। कहानी का प्रवाह शिथिल पड़ जाता है–क्योंकि कहानीकार स्वयं नहीं जानता कि उसे कहां जाना है 'उद्देश्य' कहानीकार की मंजिल है, चाहे वह उपदेश का रूप धारण करे या और कुछ।

'कहानी' कहने तथा लिखने के मुख्य दो ढंग हैं:––

१. वर्णन के द्वारा	By Telling
२. चित्रण के द्वारा	By Showing

1. वर्णन के द्वारा कहानीकार अपने पात्र तथा घटना के बारे में सब कुछ कह देता है। उसके पात्र स्वयं कुछ नहीं कहते। जैसे:––

उस लकड़हारे की ईमानदारी पर प्रसन्न होकर जल देवता ने वे तीनों कुल्हाड़ियां उसे दे दी। लकड़हारा उन्हें प्रणाम कर तथा धन्यवाद दे, खुशी-खुशी अपने घर चला गया।

यह एक कहानी का अंश है । इसमें कहानीकार ने जल-देवता' और 'लकड़हारे' के बारे में सब कुछ कह दिया । जल-देवता और लकड़हारे ने स्वयं कुछ नहीं कहा । याद रहे--

इस ढंग की विशेषता यह है कि यह 'संक्षिप्त' है । संक्षेप में बहुत कुछ कहा जा सकता है । लेकिन--

इसमें 'संवाद' का बिलकुल अभाव सा रहता है ।

2. चित्रण के द्वारा कहानीकार अपने पाठकों के सामने एक दृश्य उपस्थित कर देता है । जो कुछ वह कहना चाहता है, वह अपने पात्रों के द्वारा कहलवाता है । उसके पात्र बोलते हैं । वह स्वयं कुछ नहीं कहता । जैसे--

जल-देवता ने कहा--"यद्यपि तुम गरीब हो, परन्तु बेईमान नहीं । मैं तुम्हारी ईमानदारी पर बहुत प्रसन्न हूं । लो, ये तीनों कुल्हाड़ियां मैं तुम्हें खुशी से देता हूं ।"

लकड़हारा गद्‌गद हो गया और कुल्हाड़ियां लेते हुए बोला-"भगवन ! मैं किस मुख से आपको धन्यवाद दूँ ! आपने जो मुझ पर कृपा की है, उसके लिये मैं आपका बहुत आभारी हूं । मैं आपको कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं ! मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिये ।"

यह कहकर वह लकड़हारा खुशी-खुशी अपने घर लौट गया ।

यह उसी कहानी का अंश है जिसका जिक्र पहले आ चुका है। इसमें उस अंश को दूसरे ढंग से लिखा गया है। इसमें,

कहानीकार ने 'जल-देवता' और 'लकड़हारे' के बारे में स्वयं कुछ नहीं कहा। जो कुछ वह कहना चाहता था, उसने अपन पात्रों (जल-देवता और लकड़हारा) के द्वारा कहलवाया। याद रहे–

इस ढंग की विशेषता यह है कि इससे पाठक के सामने एक उद्देश्य दृश्य हो जाता है। यह पहले की अपेक्षा अधिक स्पष्ट है। इसमें सम्वाद' की प्रधानता है। आदि कारणों से यह पहले की अपेक्षा अधिक मनोरंजक बन जाता है। परन्तु–इससे कहानी का विस्तार बढ़ जाता है।

कहानी लिखने के ये दोनों ढंग प्रचलित हैं। कौनसा ढंग किस कहानी के लिये अधिक उपयुक्त होगा यह लेखक पर निर्भर है। प्राय: प्रत्येक कहानीकार इन दोनों तरीकों को आवश्यकतानुसार अपना लेता है।

इनके अतिरिक्त, अपनी कहानी को सफल बनाने के लिये, कहानीकार को निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिये:—

1. कहानीकार का पहला काम यह होता है कि कहानी के प्रारंभ से ही वह पढ़ने वालों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर ले और उस आकर्षण उस–दिलचस्पी को आदि से अन्त तक बनाए रखे।

2. यह दिलचस्पी तभी बनी रह सकती है जब कहानीकार अपनी संपूर्ण कहानी में एक प्रकार का रहस्य (Sus-

pense) बनाए रखे । उस रहस्य को वह धीरे धीरे पाठकों के सामने खोले–जिससे पाठकों के दिल में यह उत्सुकता बराबर बनी रहे कि आगे क्या होने वाला है ।

3. कहानीकार के दिमाग में कहानी की कथा वस्तु उसका कथोपकथन तथा उद्देश्य आदि स्पष्ट होने चाहिये । भाव तथा विचारों में कहीं भी अस्पष्टता न हो ।

4. कहानी की भाषा अत्यन्त सरल होनी चाहिए । साधारण बोलचाल की भाषा इसके लिए अधिक उपयुक्त होती है ।

5. संपूर्ण कहानी में एक प्रकार का वातावरण होना चाहिए । भावों के बने रहने के कारण ही वातावरण की सृष्टि होती है ।

6. कहानी में घटना तथा भावों की प्रधानता होती है । अतः घटना तथा भावों का क्रम इस प्रकार का होना चाहिए कि जिससे कहानी स्वयं आगे बढ़ती जाय ।

7. कहानी की 'शैली' आकर्षक हो ।

संक्षेप में, कहानीकार को चाहिए कि उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, उचित पात्रों का निर्माण कर, वह एक ऐसा खाका तय्यार कर ले और फिर उसे एक ऐसे रोचक ढंग से लिखे–जिससे कि कहानी पढ़ने वालों की दिलचस्पी आदि से अन्त तक बराबर बनी रहे । जैसे—

आज़ादी

सर्दी के दिन थे । शाम ढल चुकी थी । रात ने अपनी काली चादर से सारी पृथ्वी को ढक दिया था । उस अंधेरी रात में एक भेड़िया अपने भोजन की तलाश में निकला ।

जंगल घना था और चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था । दूर तक किसी के चलने फिरने की आवाज नहीं सुनाई देती थी । कभी-कभी तेज हवा के झोंके से या किसी जंगली जानवर के एकाएक भागने तथा फिर छिप जाने से सूखे पत्ते और पौधे खड़खड़ा उठते । उस सर्दी की अंधेरी रात में कोई भी प्राणी बाहर नहीं था । पक्षी अपने-अपने घोंसलों में बसेरा कर चुके थे; और जंगल के अन्य प्राणी भी अपनी-अपनी मांदों में दुबके पड़े थे । सिर्फ ऊपर आसमान में ठिठुरे हुए सितारे, अपने-अपने झरोखों में बैठे, चुपचाप नीचे उस अंधेरी रात का तमाशा देख रहे थे ।

उस बियाबान सरदी की रात में वह भेड़िया रातभर अपने भोजन की तलाश में भटकता रहा, मगर कोई शिकार उसके हाथ नहीं आया । अन्त में भटकते-भटकते वह पिछली रात के समय किसी एक गांव के समीप निकल आया । उसने अपने आप को एक बड़ी हवेली के अहाते में पाया । उसने चारों तरफ नजर दौड़ाई, लेकिन उसे वहां कोई प्राणी दिखाई नहीं दिया । अचानक एक तरफ से गुर्राने की आवाज उसके कानों में पड़ी । उसने उधर नजर उठाई । देखा, सामने दरवाजे पर दो तेज

आंखें चमक रही हैं। भेड़िया समझ गया–वह कुत्ता है जो अन्धेरे में साफ नजर नहीं आ रहा था, क्योंकि उसका रंग काला था।

भेड़िया थक कर चूर हो चुका था। उसने मन में सोचा भागना व्यर्थ है, क्योंकि कुत्ता शीघ्र ही उसे धर दबाएगा। वह वहीं दुम दबाए खड़ा रहा। इतने में कुत्ता भी नजदीक आ चुका था। कुत्ता फिर गुर्राया और बोला– "यहां क्यों आए हो अपनी खैर चाहते हो तो जैसे आए हो वैसे ही लौट जाओ।"

भेड़िया नरम पड़ चुका था। वह बोला––"मित्र ! मैं दुश्मन नहीं हूं। मुझे भी अपना भाई ही समझो।"

कुत्ता ठहाका मार कर हंसा और बोला–"भाई ? एक। चोर की तरह घुस आने वाला मेरा भाई कैसे बन सकता है ?"

"बिना सोचे-विचारे यों किसी पर हंसना और उसे चोर कह कर बदनाम करना ठीक नहीं होता, मेरे दोस्त !"–भेड़िये ने तुरन्त जवाब दिया।

कुत्ता जरा झेंप गया और बोला––"अच्छा, तुम क्या चाहते हो ?"

"मित्र। मैं रात भर भोजन की तलाश में भटकता रहा लेकिन कहीं कुछ हाथ नहीं आया मैं बहुत भूखा हूं और भटकते भटकते थक कर चूर भी हो गया हूं। क्या तुम मेरी मदद कर सकते हो ?"–भेड़िये ने कहा।

कुत्ते को उस पर दया आ गई और वह बोला–"अच्छा, तुम सुबह तक यहीं रहो। जब मुझे नाश्ता मिलेगा तो तुम्हें भी उसमें से कुछ मिल जायगा।"

भेड़िये ने उसे धन्यवाद दिया और कहा––"मित्र, तुम कितने खुश किस्मत हो जो बैठे-बिठाए ही खाना-पीना मिल जाता है, कुछ खास करना-धरना नहीं पड़ता। तुम्हारी कितनी आराम की जिन्दगी है और मेरी ? यहां तो दिन-रात भोजन की तलाश में भटकना पड़ता है और फिर भी आधा भूखा ही रहता हूं। देखो, मैं कितना दुबला हूं और तुम ?–बुरा न मानना मित्र–तुम कितने मोटे ताजे दिखाई दे रहे हो !"

कुत्ता अपनी तारीफ सुनकर फूल गया और अहंभाव से बोला––"मैं अपने मालिक की सेवा करता हूं और मेरा मालिक मुझे पेटभर भोजन देता है। तुम्हारी तरह मारा-मारा नहीं फिरता।"

तब भेड़िये ने कहा–"क्या तुम्हारा मालिक तुम्हारी तरह मुझे भी अपने यहां काम पर रख सकता है ?"

यह सुनकर कुत्ता हंसने लगा और बोला–"भाई, तुम भेड़िये हो। एक भेड़िये को भला इन्सान कैसे पाल सकता है ? और यदि पाल भी ले तो भेड़िया आखिर भेड़िया ही है–इन्सान के क्या काम आ सकता है ?"

इस पर भेड़िया बोला––"मित्र, यह न भूलो कि किसी

वक्त तुम भी मेरी ही जाति के थे। देखो, हम दोनों की शकलें कितनी मिलती-जुलती हैं। धीरे-धीरे तुम इन्सान की बस्ती में रह कर पालतू बन गए और मैं? खैर, जाने दो इन बातों को।"

कुत्ता बोला--"अच्छी बात है। अगर तुम चाहते हो तो मैं अपने मालिक से तुम्हारी सिफारिश कर दूँगा।"

भेड़िया खुश हो गया।

इतने में पौ फट रही थी और धीरे धीरे अंधेरा कम हो रहा था। भेड़िये को कुत्ता अब साफ दिखाई पड़ रहा था। उसकी नजर कुत्ते के गले में पड़े हुए चमड़े के पट्टे पर पड़ी। उसने पूछा--"मित्र! यह तुम्हारे गले में क्या चीज है? यह तो बड़ी सुन्दर है।"

कुत्ते ने जरा घमण्ड से उत्तर दिया--"यह मेरा पट्टा है।

"यह किस काम आता है?" -भेड़िये ने पूछा।

कुत्ते ने जबाब दिया--"मेरा मालिक मुझे अक्सर दिन के वक्त, इसमें जंजीर डाल कर, बांध कर रखता है।"

भेड़िये ने मन में सोचा--"पट्टा और जंजीर?" -और अचानक मुड़ते हुए उसने कहा--"अच्छा मित्र, अल विदा!" और वह वहां से चल दिया।

भेड़िये को यों अचानक बिना कारण जाते हुए देख कुत्ता बड़ा हैरान हुआ और बोला--"मित्र! तुम एक दम क्यों चल पड़े?"

जाते-जाते भेड़िये ने जबाब दिया—

"मित्र ! तुम्हारी इस गुलामी की जिन्दगी से मुझे अपनी जंगल की आजाद जिन्दगी ज्यादा पसन्द है। चाहे मुझे भूखा ही क्यों न रहना पड़े।"

देखते-देखते भेड़िया आंख से ओझल हो गया और कुत्ता वहीं खड़ा खड़ा मन में सोचने लगा—"उसे आजादी कितनी पसन्द है। और मुझे ?" याद रहे—

'कहानी' मनुष्य अपने मनोरंजन के लिए पढ़ता है। जिस कहानी से उसका मनोरंजन नहीं होता, वह उसे नहीं पढ़ता। अतः वही कहानियां अधिकतर पढ़ी जाती हैं जो मनोरंजक अर्थात् दिलचस्प हों। और जो ऐसी मनोरंजक कहानियां लिख सके वही सफल कहानीकार माना जाता है।

प्रश्न

I. कहानी किसे कहते हैं ? संक्षेप में समझाओ।

II. पहले और अब की कहानी में क्या अन्तर है ? बताओ।

III. कहानी सदा से क्यों और कैसे लोकप्रिय बनी रही है ? समझाओ।

IV. कहानी का विकास कैसे हुआ ? प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक युग में कहानी का स्वरूप क्या रहा ? संक्षेप में समझाओ।

V. कहानी कहना या लिखना क्या सरल है ? यदि नहीं, तो क्यों ?

VI. कहानी के प्रमुख अंग कौन-कौन से हैं ? उनके नाम बताओ तथा समझाओ ।

VII. कहानी कहने तथा लिखने के मुख्य ढंग कितने हैं ? प्रत्येक को समझा कर लिखो ।

VIII. कहानीकार को कहानी लिखते समय, किन किन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिये ? समझा कर लिखो ।

IX. कौन सी कहानी सफल कही जा सकती है ?

X. नीचे दिए गए विषयों पर कहानी लिखो ।

(1) परिश्रम का फल ।

(2) झूठ का फल ।

(3) सच्चा बालक (जॉर्ज वाशिंगटन)

(4) "ऊंगली पकड़ कर पौंहचा पकड़ना ।"
(अरब और ऊंट)

(5) शिवाजी की चतुराई (औरंगजेब की कैद से निकल आना) ।



पाठ 39

निबन्ध

ESSAY

जब मनुष्य किसी वस्तु, स्थान, दृश्य, घटना तथा बात आदि विषय पर, क्रमवद्ध तथा अच्छी शैली में, अपने विचार प्रकट करता है तो उसे 'प्रस्ताव' या 'निबन्ध' कहते हैं। अर्थात्—

किसी भी विषय पर, क्रमवद्ध तथा अच्छी शैली में, विचार प्रकट करना 'निबन्ध' कहलाता है।

निबन्ध-कला आधुनिक युग की देन है। प्राचीन तथा मध्य-युग में 'निबन्ध' लगभग नहीं के बराबर थे। यदि होंगे भी तो वे अच्छे निबन्धों की कोटि में नहीं आ सकते।

आधुनिक युग में आकर 'निबन्ध' का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया। इसका कारण यह है कि इस युग में वैज्ञानिक आविष्कार, राजनीति, शिक्षा आदि के कारण जीवन की प्रगति बहुत तेज रफ्तार से हुई। अतः अनेक विषयों पर विचार प्रकट करने की आवश्यकता पड़ी। पत्र पत्रिकाओं में

अनेक विषयों पर सुन्दर लेख लिखे जाने लगे। ये लेख अधिकतर निबन्ध के रूप में हमारे सामने आए। और इस प्रकार साहित्यकारों तथा विद्वानों का ध्यान 'निबन्ध-कला' की ओर गया।

विषय तथा रचना के अनुसार निबन्ध तीन प्रकार के माने गए हैं।

1. वर्णनात्मक — Descriptive
2. विवरणात्मक — Narrative
3. विचारात्मक — Reflective

1. किसी वस्तु, स्थान, दृश्य आदि के वर्णन को 'वर्णनात्मक निबन्ध' कहते हैं। जैसे—

वायुयान, हमारा गांव, सूर्योदय आदि।

ऐसे निबन्धों में किसी भी चीज का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि वे पढ़ने वालों को उसी प्रकार लगें जैसे लिखने वाले को। इसमें लेखक, अपने शब्दों के द्वारा, उस चीज का हूबहू चित्र यानी तस्वीर खींच देता है।

2. किसी घटना, जीवनी तथा कहानी के विवरण को 'विवरणात्मक निबन्ध' कहते हैं। जैसे—

स्वतन्त्रता-दिवस, महात्मा गांधी, गौतम बुद्ध का गृह–त्याग आदि।

ऐसे निबन्धों में लेखक किसी घटना जीवनी तथा

ऐतिहासिक या अन्य कहानी का केवल, अपने शब्दों में, विवरण यानी हाल बता देता है कि अमुक घटना, जीवनी तथा कहानी कैसे घटी या हुई।

3. जब किसी विषय पर विचार तथा विवेचन किया जाता है तो उसे 'विचारात्मक निबन्ध' कहते हैं। जैसे—

मित्रता देश-भक्ति, विज्ञान से लाभ या हानि आदि।

ऐसै निबन्धों में, लेखक के द्वारा, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक आदि विषयों पर विचार तथा विवेचन किया जाता है।

बनावट तथा रचना (Structure) की दृष्टि से प्रत्येक निबन्ध को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

1. भूमिका	Introduction
2. कलेवर	Treatment
3. उपसंहार	Conclusion

1. 'भूमिका' में विषय का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है और इस प्रकार निबन्ध का प्रारम्भ होता है।

यद्यपि यह परिचय संक्षिप्त ही होता है, परन्तु इससे एक ही दृष्टि में, उक्त विषय पर पूर्ण प्रकाश पड़ जाता है।

2. 'कलेवर' में विषय का पूर्ण रूप से वर्णन, विवरण तथा उस पर विचार, विवेचन आदि किया जाता है।

निबन्ध में उसका 'कलेवर' ही प्रधान होता है, क्योंकि किसी विषय पर लेखक जो कुछ कहना चाहता है, इसी में कहता है। यह विषय का विस्तृत एवं क्रमवद्ध वर्णन, विवरण तथा विवेचन है। विषय का विस्तार पूर्वक वर्णन, विवरण, विचार तथा विवेचन आदि इसी में होता है।

3. 'उपसंहार' में लेखक उक्त विषय पर अपने निर्णयात्मक विचार देकर निबन्ध को बन्द करता है।

'उपसंहार' एक प्रकार से सम्पूर्ण विषय पर 'विहंगावलोकन' है। कुछ ही शब्दों में, विषय पर प्रकाश डालता हुआ लेखक अपना निबन्ध बन्द कर देता है।

निबन्ध लिखते समय हमें निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिये :—

1. जिस विषय पर निबन्ध लिखना है, उसका हमें पूरा ज्ञान होना चाहिए।

यदि विषय का पूरा ज्ञान हमें नहीं है तो हम एक अच्छा निबन्ध नहीं लिख सकेंगे। अतः —

विषय की पूरी जानकारी निबन्ध लेखक को अवश्य होनी चाहिए।

2. निबन्ध के विषय को पहले अच्छी तरह सोच और समझ लेना चाहिए। जो-जो बातें (Points) तथा विचार

(Ideas) हमारे दिल और दिमाग में आएं, उन्हें नोट कर लेना चाहिए ।

ऐसा करने से यह लाभ होता है कि लिखते समय उक्त विषय-सम्बन्धी कोई भी बात हमसे छूटने नहीं पाती ।

3. फिर उन नोट की हुई बातों (Points) तथा विचारों (Ideas) को, उनके स्वाभाविक क्रम से, रख देना चाहिए ताकि उनसे विषय पर क्रमशः प्रकाश पड़ सके ।

ऐसा करने से निबन्ध की एक 'रूप-रेखा' (Outline) तय्यार हो जाती है, जिससे निबन्ध को सिलसिलेवार लिखने में हमें मदद मिलती है ।

4. लिखते समय निबन्ध की बनावट (Structure) की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए । अर्थात्—

बनी हुई रूप रेखा से सम्पूर्ण निबन्ध को गद्यांश (Paragraphs) में विभक्त कर देना चाहिए । जैसे—

भूमिका के लिए एक गद्यांश, कलेवर के लिए, आवश्यकतानुसार, एक या एक से अधिक गद्यांश तथा उप-संहार के लिए एक गद्यांश होना चाहिये ।

ये गद्यांश, आवश्यकतानुसार, छोटे या बड़े हो सकते हैं, परन्तु फिर भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि गद्यांश अधिक बड़े न हों और एक गद्यांश में एक से अधिक

बात तथा विचारों का समावेश न हो। एक गद्यांश में केवल एक ही बात कही जाय।

5. निबन्ध की भाषा सरल तथा बोलचाल की हो। वाक्य छोटे-छोटे हों और विचार स्पष्ट हों।

6. निबन्ध लिखते समय इस बात का पूरा ध्यान रहे कि कोई भी बात बारबार न दुहराई जाय और न ही उन बातों से इधर-उधर भटका जाय। याद रहें—

निबन्ध में विचारों की प्रधानता होती है, भावों की नहीं। और—

कोई भी निबन्ध ऐसा नही है जिसमें केवल वर्णन, विवरण या विवेचन पाया जाय।

प्रत्येक निबन्ध में, कम या अधिक मात्रा में, वर्णन, विवरण तथा विवेचन अवश्य पाया जाता है।

निबन्धों का वर्गीकरण विषय के आधार पर किया जाता है।

वर्ग के अनुसार निबन्ध के कुछ उदाहरण अगले पृष्ठ पर दिये जाते है :—

1. वर्णनात्मक निबन्ध

गुलमर्ग की सैर

जुलाई का महीना आया । कुछ दिनों के लिए हमारा स्कूल बन्द हुआ । प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमें तीन हफ्ते की गर्मी की छुट्टियां मिली हमने प्रस्ताव रखा—इस वर्ष गुलमर्ग की सैर की जाय । गुलमर्ग श्रीनगर से लगभग पच्चीस मील दूर, दक्षिण पश्चिम में, एक रमणीय पहाड़ी स्थान है । समुन्द्रतल से यह लगभग आठ हजार फीट की ऊंचाई पर है । यहां का जलवायु स्वास्थ्य प्रद है । इसे तमाम पहाड़ी स्थानों की रानी माना गया है । ऐसे सुन्दर स्थान की सैर करना भला कौन नहीं चाहेगा ? अतः हमारा प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास हो गया ।

दूसरे ही दिन हम अपने बिस्तर, कपड़े तथा आवश्यक चीजें लेकर 'ट्यूरिस्ट सेण्टर' पर सुबह ठीक सात बजे पहुंच गए । हमारी बस तय्यार खड़ी थी । हमने अपना-अपना सामान लादा, बैठे और आधा घण्टे के अन्दर गाड़ी गुलमर्ग के लिए रवाना हो गई ।

टंगमर्ग तक रास्ता मैदानी है । सफर के ये दो घण्टे कैसे बीत गये, हमें पता ही नहीं चला । ठीक साढ़े नौ बजे

हम टंगमर्ग पहुंचे । बस से अपना-अपना सामान उतारा, देखा गुलमर्ग के लिए घोड़े खड़े थे । यहां से गुलमर्ग तक तीन मील की चढ़ाई है । हमने अपनी-अपनी पसन्द के घोड़े लिए, और सामान कुलियों के हवाले कर, हम गुलमर्ग के लिए चल पड़े ।

ऊंचे ऊंचे चीड़ के वृक्षों से ढका हुआ यह पहाड़ी मार्ग अति सुन्दर तथा मनोरम लग रहा था । मार्ग काफी चौड़ा था, अतः कुछ मित्र ऐड़ लगाकर घोड़ों को सरपट दौड़ा रहे थे । पहाड़ के किनारे-किनारे हम चले जा रहे थे । एक तरफ पहाड़ की एकदम ऊंची चढ़ाई और दूसरी तरफ एकदम ढलान जिन पर चीढ़ के ऊंचे-ऊंचे वृक्ष खड़े थे । कभी हमारी नजर, उन चीड़ के वृक्षों को चीरती हुई, सामने के पहाड़ की चोटी से जा टकराती—जो दूध से धूली हुई वर्फ से ढकी हुई थी; तो कभी ढलान की ओर नीचे कलकल करते हुए फिरोजपुर नाले पर—जो अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है । कभी हम उस सुन्दर पहाड़ी दृश्य को देखते और कभी अपने में खो जाते । हमारा मार्ग, बलखाता हुआ, पहाड़ी पर चला जा रहा था थौर हम भी उसी के साथ-साथ विचार तरंगों में चढ़ते-उतरते चले जा रहे थे । हमें पता ही नहीं रहा कि गुलमर्ग कब आ गया ।

गुलमर्ग पहुंचते ही देखा—सारी वादी, एक कढ़ाई की शकल लिए हुए, आठ-दस मील के घेरे में, सुन्दर पहाड़ियों के बीच-बसी हुई है । एक ओर यात्रियों के ठहरने के लिए

कुछ होटल बने हुए हैं और साथ ही लगा हुआ छोटा सा बाजार । कुछ दूर नीचे की ओर विश्व प्रसिद्ध गोल्फ ग्राउण्ड है तथा क्लब आदि स्थान हैं । और आस-पास पहाड़ियों की ढलान में छोटी-छोटी 'हट्स' (Huts) बनी हुई हैं, जहां यात्री ठहरते हैं ।

एक 'हट्' का प्रबन्ध हमने भी किया था । हम उसी में ठहरे । 'हट्' अंग्रेजी शब्द है, जिसका अर्थ है–झोपड़ी । परन्तु इन्हें आप झोपड़ी न समझें । लकड़ी के बने हुए ये छोटे-छोटे मकान अति सुन्दर व प्यारे लगते हैं । घर का पूरा आराम इनमें पाया जाता है, और फिर घर जैसी स्वतन्त्रता– जो होटलों में नहीं मिल सकती ।

दूसरे दिन सुबह हम जल्दी उठे । तय्यार हुए और नाश्ता किया, घोड़े लिए और खिलन-मर्ग के लिए चल पड़े । खिलनमर्ग गुलमर्ग से लगभग तीन मील की चढ़ाई पर एक रमणीय स्थान हं । यह लगभग साढ़े नौ हजार फीट की ऊंचाई पर है । यहां लोग बहुधा 'पिकनिक' व सैर को आते हैं । यहां प्राय: वर्फ पड़ी हुई मिलती है, जिनपर लोग फिसलते हैं और उसका आनन्द उठाते हैं । यहां से नागा पहाड़ की वर्फ से ढकी हुई चोटियां दिखाई पड़ती हैं, हम अपने साथ खाने पीने की चीजें ले गए थे अत: 'पिकनिक' का वड़ा आनन्द आया । सन्ध्या होने से पहले हम लौट पड़े । पहाड़ी मार्ग बहुत ही सुन्दर है । सूर्यास्त हो रहा था । सूर्यास्न की सुनहली किरणें, पहाड़ की

चोटियों पर, उन्हें सुनहली बना रही थीं । बर्फ से ढकी हुई चोटियां स्वर्ण-मुकुट सी लग रही थीं । चीड़ के लम्बे–लम्बे साए बड़े गम्भीर तथा सुन्दर लग रहे थे । शाम ढलते ही हम अपने निवास स्थान पर पहुंच गए ।

एक दिन के विश्राम के बाद हमारा 'प्रोग्राम' फिरोजपुर नाले पर जाने का बना । यह लगभग ढाई–तीन मील की उतराई पर है । खाने–पीने की चीजें ले, हम घोड़ों पर चल पड़े । कुछ दूर तक तो मार्ग अच्छा मिला, परन्तु आगे चल कर उतराई बड़ी विकट आ गई । बड़ी होशियारी से हम उतरने लगे । फिरोजपुर नाला दो ऊंची–ऊंची पहाड़ियों के बीच, अपना रास्ता काट कर, कलकल–छलछल कर बह रहा था । पानी बड़ा ठण्डा था । वहीं नाले के किनारे बैठ हमने अपनी 'पिकनिक' का आनन्द उठाया । यहां पर भी बहुत से लोग 'पिकनिक' के लिए आते हैं । अभी चार ही बजे थे, परन्तु पहाड़ियों की गहरी छाया से घाटी में अन्धेरा सा बढ़ने लगा । हम लौट पड़े और शाम होते ही अपने स्थान पर पहुंच गये ।

.एक दिन के विश्राम के बाद हम फिर बाबा ऋषि गए । यह एक मुस्लिम संत की यादगार में बना हुआ एक सुन्दर तथा पवित्र स्थान है । गुलमर्ग आने वाला कोई भी यात्री यहां आना नहीं भूलता ।

गुलमर्ग में लगभग, हम आठ दिन ठहरे । उसके बाद

हम श्रीनगर लौट पड़े। गुलमर्ग सैर की वह मधुर स्मृति आज भी उसी तरह ताजी बनी हुई है, धुंधली नही पड़ी है। याद रहे—

वर्णनात्मक निबन्धों में 'वर्णन' की प्रधानता रहती है; 'विवरण' तथा 'विवेचन' उसके सहायक रूप में होते हैं।



2. विवरणात्मक निबन्ध

बाबर

बाबर एक वीर और पराक्रमी बादशाह हो चुका है, जिसने भारत में मुगल वंश की नींव डाली। वह पहला मुगल बादशाह था जिसने भारत पर राज्य किया।

बाबर का पूरा नाम ज़हीरुद्दीन बाबर था। फ़ारसी में 'बब्बर' शेर को कहते हैं। बाबर शेर की तरह बहादुर और दिलेर थे। उसके मित्रों ने उसे 'बब्बर' अर्थात् 'बाबर' की उपाधि से विभूषित किया, और इसी नाम से वह इतिहास में प्रसिद्ध हुआ।

बाबर मंगोल नहीं था, तुर्क था। अतः उसे मंगोल या मुगल कहना ऐतिहासिक दृष्टि से गलत है। कहा जाता है कि बाबर मंगोल जाति से घृणा करता था, क्योंकि वह तुर्कों

की दृष्टि में असभ्य तथा बर्बर थे। बाबर तैमूर लंग का वंशज था–जो तुर्क था। उसकी माता चंगेजखां के वंश की थी–जो मंगोल था। अतः बाबर का सम्बन्ध मध्य-एशिया के दो बड़े और बहादुर घरानों से था।

बाबर का जन्म फ़रवरी 24, 1483 में हुआ। उसका पिता, उमर शेख मिर्जा, फरगाना का अमीर था। फरगाना मध्य–एशिया में स्थित है, जो आजकल रूसी-तुर्किस्तान का एक छोटा सा प्रदेश है। बचपन में बाबर की शिक्षा–दीक्षा अच्छी हुई। छोटी ही आयु में ही उसने तुर्की और फ़ारसी पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर लिया। वह इन दो भाषाओं को अच्छी तरह लिख और पढ़ सकता था। साथ ही उसे घोड़े की सवारी करना, तीर, भाले, बरछे और बन्दूक आदि अस्त्र-शस्त्र चलाना तथा युद्ध की पूरी शिक्षा मिली। वह एक अच्छा सिपाही बना।

परन्तु दुर्भाग्यवश बाबर के पिता का देहान्त, किसी दुर्घटना के कारण, युवावस्था में ही हो गया। बाबर ने, अल्पायु में ही, सारे राज्य का भार अपने कन्धों पर संभाला। उस समय उसकी उम्र केवल ग्यारह वर्ष की थी। इतनी छोटी उम्र में राज्य का संचालन करना अत्यन्त कठिन होता है, और खास कर जब दुश्मन चारों तरफ़ ताक में बैठे हों। बाबर के अपने ही रिश्तेदार उसके दुश्मन बन गए। उन्होंने उसके छोटे से राज्य को हथिया लिया। बाबर को अपनी

पैतृक सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ा और अपनी जान बचाने के लिए वहां से भागना भी पड़ा।

बाबर बे घरबार हो इधर-उधर भटकने लगा, परन्तु कुछ वफ़ादार सिपाही व मित्र अभी भी उसके साथ थे। बाबर की किस्मत उसे अफगानिस्तान खींच लाई। अफगानिस्तान की राजनीतिक दशा उस समय ठीक नहीं थी। अतः बाबर ने आसानी से ही उस पर कब्जा कर लिया और वहां का बादशाह बन बैठा। काबुल की गद्दी पर बैठने के बाद, बाबर ने एक बार और अपनी जन्मभूमि को जीतने की कोशिश की मगर व्यर्थ गई।

काबुल की गद्दी पर बैठने के बाद बाबर की दशा अच्छी हो गई। उसकी गिनती अब शक्तिशाली बादशाहों में होने लगी। उन दिनों दिल्ली के तख्त पर इब्राहीम लोदी बैठा था। वह एक अजीब और अप्रिय बादशाह था। उसके अपने ही रईस व सूबेदार उससे असन्तुष्ट थे। पंजाब के सूबेदार, दौलतखां लोदी, ने बाबर को दिल्ली के सुलतान इब्राहीम लोदी पर चढ़ाई करने का निमन्त्रण दिया। बाबर के लिए यह शुभ अवसर था। सन् 1525 में वह, युद्ध की पूरी तय्यारी कर, दिल्ली की ओर चढ़ आया। परन्तु इस दर्मियान में दौलतखां ने अपना इरादा बदल दिया; उसने बाबर का मुकाबला किया। अतः बाबर को पहले उससे लोहा लेना पड़ा। दौलत की हार हुई और बाबर ने सारे पंजाब पर अपना कब्जा जमा लिया।

सन् 1526 में बाबर फिर पूरी तय्यारी कर भारत आया। पानीपत के मैदान में मुगल और लोदी सेना के बीच घमासान युद्ध हुआ। कहते हैं–बाबर के पास कुल बारह हजार सिपाहियों की फौज थी और इब्राहीम के पास एक लाख के लगभग। परन्तु फिर भी इब्राहीम की हार हुई और बाबर विजयी हुआ।

इस जीत के बाद बाबर नें फौरन दिल्ली और आगरा पर कब्जा कर लिया। लेकिन दूसरे ही साल, 1527 में, बाबर को राजपूतों के साथ जबरदस्त टक्कर लेनी पड़ी। चित्तौड़ का राणा संग्रामसिंह एक बांका वीर था। वह इतिहास में राणा सांगा के नाम से प्रसिद्ध है। राणा सांगा राजपूत राजाओं का सरताज माना जाता था। यहाँ तक कि बहुत से नवाब भी उसका लोहा मानते थे। बाबर को राणा सांगा से चुनौती मिली। कुछ अफगान रईस, जो अभी भी लोदी वंश के राज्य का सपना देख रहे थे, राणा सांगा से जा मिले। आगरा के पास खनवा के मैदान में मुगल और राजपूत सेना की मुठभेड़ हुई। बहादुर राजपूतों की अपार सेना देख मुगल सैनिक हिम्मत खो बैठे। परन्तु बाबर मिट्टी का शेर नहीं था। उसने अपनी सेना को लल-कारा और उसने उसमें एक नई शक्ति, एक नई, स्फूर्ति, अपने ओजस्वी भाषण से जागृत की। फिर क्या था? मुगल और राजपूत एक दूसरे पर बिजली की तरह टूट पड़े। कहते हैं–राजपूत बड़ी वीरता सें लड़े और मुगलों की हार निश्चित थी, परन्तु मुगलों की गरजती हुई तोपों के सामने

राजपूतों के हाथी ठहर न सके । उनमें भगदड़ मचगई और अन्त में बाबर विजयी हुआ ।

इसके बाद शीघ्र ही बाबर ने बंगाल तक अपना कब्जा कर लिया । और इस तरह चार-पांच वर्ष के अन्दर ही वह सम्पूर्ण उत्तर भारत का स्वामी बन बैठा ।

सन 1530 में बाबर की मृत्यु हो गई । कहते हैं–हुमायूं बहुत बीमार पड़ा, जो उसे अपनी जान से भी अधिक प्यारा था । उसने अपने बेटे की जान बचाने की खातिर, अपनी जान की बाजी लगा दी । उसके दिल की आवाज खुदा तक पहुंची । हुमायूँ अच्छा होने लगा और बाबर की मृत्यु हो गई । उसके शव को, उसकी इच्छा के अनुसार काबुल में दफनाया गया ।

बाबर एक वीर सिपाही, योग्य सेनापति तथा नेक बादशाह था । बचपन में उसने कई कठिनाइयां झेलीं; कुदरत की गोद में वह पला । बड़ी से बडी कठिनाइयों का सामना वह हंसते–हंसते कर लेता था । वह निडर था। उसमें शारीरिक बल अपार था । कहते हैं–वह दो मनुष्यों को, दोनों ओर अपनी बगल में दबाकर किले की चौड़ी दीवार पर दौड सकता था । उसके हृदय में निर्दयता के भाव कभी अंकुरित नहीं हुए । वह बड़ा कोमल-हृदय तथा दयालु था । अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों से उसे अपार प्रेम था ।

बाबर पढ़ा लिखा था। वह एक अच्छा शायर यानी कवि भी था। शायरीं यानी कविता से उसे बेहद प्रेम था। और एक कवि होने के नाते उसे प्रकृति से बहुत प्रेम था। कलकल-छलछल करते हुए ठण्डे पानी के बहते हुए पहाड़ी नाले व झरने, बर्फ से ढकी हुई ऊंची-ऊंची पहाड़ियों की धवल चोटियां, जंगल की शोभा आदि उसका मन हमेशा लुभाती रहीं। यद्यपि बाबर को शराब भी बहुत प्रिय थी, परन्तु वह सीमा के बाहर कभी नहीं गया। उसे अपने चरित्र बल पर भरोसा था।

बाबर एक आदर्श-व्यक्ति, मित्र, पिता, स्वामी और बादशाह था। उसका नाम इतिहास में सदा अमर रहेगा। याद रहे—

विवरणात्मक निबन्धों में 'विवरण' की प्रधानता रहती है, 'वर्णन' तथा 'विवेचन' उसके सहायक रूप में होते हैं।



3. विचारात्मक निबन्ध

अच्छा नागरिक

अच्छा नागरिक कौन है ? वही जो अपने कर्त्तव्य और अधिकार को समझे। और—

नागरिक किसे कहते हैं ? शायद, तुम इसका साधारण

अर्थ यही लगाओगे कि–नगर में रहने वाला 'नागरिक' कहलाता है—उसी प्रकार जैसे गांव में रहने वाला 'ग्रामीण' कहलाता है । ठीक है—'नागरिक' शब्द की उत्पत्ति 'नगर' से ही हुई है, जिसका साधारण अर्थ होता है– 'नगर में रहने वाला' । उर्दू में 'नागरिक' को 'शहरी' और अंग्रेजी में 'सिटीजन' (citizen) कहते हैं । 'शहरी' और 'सिटीजन' शब्दों कीं उत्पत्ति भी इसी प्रकार हुई । 'शहर' में रहने वाला 'शहरी' कहलाया और 'सिटी' में रहना वाला 'सिटीजन' ।

परन्तु आज 'नागरिक', 'शहरी' या 'सिटीजन' का अर्थ बहुत व्यापक है । अपने देश या राज्य की सीमा में रहने वाला व्यक्ति 'नागरिक', 'शहरी', या 'सिटीजन' कहलाता है–चाहे वह गांव में रहता हो, चाहे कस्बे में या शहर में ।

अच्छा नागरिक कौन है ? वही जो अपने कर्तव्य और अधिकार को समझे । लेकिन कैसे ?

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । वह समाज में रहता है । वह समाज के बिना नहीं रह सकता । समाज के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं । क्यों ?

बहुधा हम देखते हैं कि प्रत्येक प्राणी–चींटी से लेकर हाथी तक–अपने वर्ग या झुण्ड में रहता है । प्रत्येक प्राणी के सामने दो प्रश्न हैं । एक–वह अकेला अपनी तमाम आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता । उसे अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है । दो–अपनी

रक्षा अकेला नहीं कर सकता। अपनी आत्म रक्षा के लिए भी उसे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। समुदाय शक्ति है। अतः उसे, इन दो बातों के कारण; अपने वर्ग तथा समुदाय में रहना पड़ता है।

हां, तो मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे अपने समुदाय में हिलमिल कर, प्रेम-भाव तथा सहयोग से रहना पड़ता है। ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लड़ाई-झगड़ा आदि उसके लिए ठीक नहीं ? क्योंकि प्रेम और सहयोग से ही समाज टिकता है और ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि से समाज नष्ट हो जाता है।

सहयोग किसे कहते हैं ? जब हम निःस्वार्थ भाव से किसी की मदद करते हैं, या हम किसी काम को सब मिलकर करते हैं तो उसे 'सहयोग' कहते हैं। जैसे—राह चलते किसी को यदि, दुर्घटना के कारण चोट आ जाय और गिर पड़े तो और लोग उसे उठाने दौड़ पड़ते हैं। उसे उठा कर तांगे या मोटर में बिठाकर अस्पताल ले जाते हैं, जहां उसका इलाज होता है। लोगों ने ऐसा क्यों किया ? मनुष्यता के नाते उनका यह एक कर्तव्य था जो उन्होंने पूरा किया।

इसी प्रकार जब हम रेल, बस या पोस्ट आफिस में जाते हैं तो लाइन बनाकर खड़े होते हैं और अपनी बारी आने पर टिकिट आदि खरीद लेते हैं। ऐसा करना सुविधा जनक भी है और शिष्टाचार भी ! यदि हम ऐसा न करें तो व्यर्थ की धक्कम-धुक्का होगी, जो शिष्टाचार के विरुद्ध

है और असुविधाजनक भी । हमारे काम में बाधा उत्पन्न हो जायगी । अतः लाइन बनाकर खड़े रहना-शिष्टाचार और सुविधापूर्वक काम में सहयोग देना है । इसी प्रकार जब हम किसी बाग या पार्क में जाते हैं तो हम वहां के फल और फूलों को हाथ नहीं लगाते और न ही उन्हें नष्ट करते हैं। उन्हें नष्ट करना मानो वहां की शोभा को नष्ट करना है । और न ही हम वहां किसी प्रकार की गन्दगी फैलाते हैं। अतः वहां की शोभा तथा सफाई आदि बनाए रखने में हमारा सहयोग है ।

इसी प्रकार हमें राज्य को 'टेक्स' या 'कर' देना पड़ता है । 'टेक्स' की रकम सब के भले के लिए खर्च होती है, जो आवश्यक है । यदि हम ऐसा न करें तो हम सबका काम रुक जाय और हम प्रगति न कर सकें । अतः 'टेक्स' के रूप में सब के भले के लिए सहयोग देना हमारा कर्तव्य है ।

किसी काम में हाथ बटाना या सहयोग देना 'कर्तव्य' कहलाता है । वही कर्तव्य श्रेष्ठ माना जाता है जो निःस्वार्थ भावना से किया गया हो अर्थात् जिसके बदले में कुछ नहीं चाहिए । ठीक है, परन्तु उस कर्तव्य में ही हमारा हित या भला छिपा रहता है । कर्तव्य के बदले जो हमें मिलता है, वह हमारा 'अधिकार' है । कर्तव्य और अधिकार साथ-साथ चलते हैं । परन्तु फिर भी इन दोनों में से कर्तव्य का स्थान ऊंचा है । पहले कर्तव्य, फिर अधिकार । कर्तव्य किये बिना अधिकार मांगने की चेष्टा करना अर्थहीन है । पागलपन है और

कर्तव्य में त्याग की भावना होती है, अधिकार में स्वार्थ की। अतः कर्तव्य करते चलो अपने अधिकार को न देखो। इस दृष्टि से यदि देखा जाय तो फिर 'अधिकार' का कोई स्थान, कोई महत्व नहीं रहता। परन्तु नहीं, अधिकार की भावना इसी लिए होती है कि हम दूसरों को सचेत करें कि उनका कर्तव्य हमारे प्रति, दूसरों के प्रति क्या है? यदि अधिकार पर जोर न दिया जाय तो सम्भव है कोई भी अपना कर्तव्य पूरा न करे।

यह कर्तव्य हमें हर जगह निभाना पड़ता है। हम अपने घर में रहते हैं। अपने से बड़ों की आज्ञा मानना, उनकी सेवा करना हमारा 'धर्म' है। यही धर्म 'कर्तव्य' कहलाता है। इसी प्रकार स्कूल तथा कॉलेज में अपने अध्यापकों के प्रति श्रद्धा रखना, उनका आदर करना, आज्ञा मानना तथा सेवा करना हमारा कर्तव्य है–धर्म है। यही नहीं हम अपने गांव तथा नगर में रहते हैं। अतः अपने ग्राम तथा नगर-वासियों के प्रति हमारा कुछ कर्तव्य है। हम अपने देश में रहते हैं। अपने देश-वासियों के प्रति हमारा कुछ कर्तव्य है। हमारा कर्तव्य यहीं नहीं समाप्त हो जाता है, बल्कि हम विश्व के महान मानव-समुदाय के एक सदस्य हैं। अतः अपने देश के बाहर भी प्रत्येक मानव के प्रति हमारा कुछ कर्तव्य है।

कर्तव्य करने वाला व्यक्ति ही महान तथा आदर्श माना जाता है; वही सच्चा इन्सान और अच्छा नागरिक है। याद रहे

विचारात्मक निबन्धों में 'विचार' तथा 'विवेचन' की प्रधानता रहती है, 'वर्णन' और विवरण' उसके सहायक के रूप में होते हैं।

प्रश्न

I. निबन्ध किसे कहते हैं ?

II. निबन्ध कला का प्रारम्भ क्यों ग्रौर कैसे हुआ ? लिखो ।

III. निबन्ध कितने प्रकार के होते हैं ? उनके नाम परिभाषा सहित लिखो ।

IV. निबन्ध के अंग कौन से हैं ? समझाकर लिखो ।

V. निबन्ध लिखते समय हमें किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ? समझाकर लिखो ।

VI. नीचे लिखे विषयों पर निबन्ध लिखो :—

1. हमारा स्कूल ।
2. प्रात:काल की सैर ।
3. स्कूल में पारितोषक दिवस ।
4. राजा राममोहन रॉय ।
5. शिक्षा से लाभ ।
6. विज्ञान से लाभ या हानि ।

पद्य-रचना

पाठ 40

पद्य

VERSE

'पद्य' कविता की भाषा है । अर्थात्—

पद्य में कविता की जाती है ।

साधारणतः 'पद्य' (Verse) और 'कविता' (Poetry) में कोई अन्तर दिखाई नहीं देता । प्रायः बहुत से लोग 'पद्य' को ही 'कविता' मानते हैं। ठीक है, पद्य का ही दूसरा नाम कविता है । परन्तु—

पद्य कविता का शरीर है, और कविता पद्य की आत्मा । अतः —

शरीर और आत्मा में जो अन्तर है, वही अन्तर 'पद्य' और 'कविता' में है ।

पद्य गद्य से बहुत प्राचीन है । जब मनुष्य पढ़ना लिखना नहीं जानते थे और जब गद्य का जन्म भी नहीं हुआ था, उस समय भी पद्य-रचना होती थी। लोग सुन्दर कविताएं बनाकर गाते थे, जिससे उनका भी मनोरंजन होता था और

औरों का भी । ऐंसी कविताएं आज भी 'ग्राम्य गीतों' के नाम से मिलती हैं ।

पहले कविताएं गाई जाती थीं । और—

अब कविताएं गाने के अतिरिक्त लिखी और पढ़ी भी जाती हैं ।

पद्य की अपनी कुछ विशेषताएं हैं :—

1. मनुष्य स्वभाव से संगीत-प्रेमी है । उसे गाना बहुत अच्छा लगता है । जैसें—

बच्चा भी अपनी मां से मीठी-मीठी लौरियां सुनकर सो जाता है ।

पद्य अर्थात् कविता का संगीत से घनिष्ट सम्बन्ध है । कविताएं गाई जाती हैं । उनमें संगीत पाया जाता है ।

2. पद्य अर्थात् कविता को कंठस्थ करने में बड़ी सुविधा होती है ।

प्राचीन समय में, जब लिखने की कला नहीं थी, बहुत सी ज्ञान की बातें पद्य में कही जाती थीं, क्योंकि वे आसानी सें याद करली जा सकती थीं ।

3. पद्य अर्थात् कविता में थोड़े से शब्दों के द्वारा अधिक प्रभावोत्पादक बातें कही जा सकती हैं ।

पद्य की भाषा नपी-तुली होती है । क्योंकि—

पद्य यानी कविता गाने की चीज है । उसमें संगीत के

समान लय का उतार-चढ़ाव पाया जाता है। गाने का यह उतार-चढ़ाव एक खास क्रम से चलाता है। अतः—

पद्य की भाषा को लय के उतार-चढ़ाव के क्रम के अनुसार रखना पड़ता है।

कविता का जो स्वरूप बनता है, उसे 'छन्द' कहते हैं।

छन्द बनाने के नियम 'छन्द-शास्त्र' में पाए जाते हैं।

छन्द दो प्रकार के हैं :—

1. मात्रिक
2. वर्णिक

1. जिन छन्दों में केवल मात्राओं की गिनती का ध्यान रखा जाता है, उन्हें 'मात्रिक छन्द' कहते हैं।

मात्रिक छन्दों में मात्राओं की गिनती प्रधान होती है।

2. जिन छन्दों में वर्णों तथा उनकी मात्राओं के क्रम का ध्यान रखा जाता है, उन्हें, 'वर्णिक छन्द' कहते हैं।

वर्णिक छन्दों में वर्णों तथा उनकी मात्राओं का क्रम प्रधान होता है।

मात्राएं वर्णों के अनुसार गिनी जाती हैं। जैसे—

1. ह्रस्व स्वर की एक मात्रा। जैसे—

अ, इ, उ, ऋ।

2. दीर्घ स्वर की दो मात्राएं। जैसे—

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

3. अनुस्वार की एक मात्रा । जैसे—
अं

4. विसर्ग की दो मात्राएं। जैसे—
अ:

5. पूर्ण या अर्ध-व्यंजन की एक मात्रा । जैसे—
क, क्, ख, ख् आदि ।

याद रहे—

यदि व्यंजनों के साथ स्वरों की मात्राएं मिली होती हैं तो केवल स्वरों की मात्राएं गिनी जाती हैं, व्यंजनों की नहीं ।

ह्रस्व अर्थात् एक मात्रा को 'लघु' कहते हैं । लघु का चिन्ह यह (।) है ।

दीर्घ अर्थात् दो मात्रा को 'गुरू' कहते हैं । गुरू का चिन्ह यह (s) है ।

मात्राएं गिनते समय प्रत्येक वर्ण के नीचे 'लघु' (।) और 'गुरू' (s) के निशान लगा दिए जाते हैं । इनसे मात्राएं गिनने में आसानी हो जाती है ।—

कल = दो मात्राएं, कला = तीन मात्राएं
। ।　　　　　। s

हंसना = चार मात्राएं, अत: = तीन मात्राएं
। । s　　　　　। s

कञ्चन या कंचन—चार मात्राएं
। । । ।　s । ।

परोपकारी बन वीर बनो ।
। S । S S । । S । । S

नीचे पड़े भारत को उठाओ ।।
S S । S S । । S । S S

पहली पंक्ति में 16 मात्राएं हैं, और दूसरी पक्ति में 18 मात्राएं है ।

कुछ छन्द उनकी मात्राओं सहित नीचे दिये जाते हैं:-

1. चौपाई

धीरज धरम मित्र अरु नारी ।
S । । । । । । S । । S S

आपत काल परखिए चारी ।।
S । । S । । । । S S S

प्रत्येक पंक्ति में 16 मात्राएं हैं ।

2. दोहा

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
S । । S । । । । । S S । । S । । S ।

जाके हिरदे सांच है, ताके हिरदे आप ।।
S S । S S । S S S । । S S ।

प्रत्येक पंक्ति में 13 और 11 मात्राएं ।

प्रश्न

I. पद्य किसे कहते हैं ?

II. पद्य और कविता में क्या अन्तर है ? बताओ ।

III. पद्य की विशेषताएं क्या हैं ? लिखो ।

IV. छन्द कितने प्रकार के हैं ? उनके नाम तथा परिभाषाएं लिखो ।

V. मात्राएं कैसे गिनी जाती हैं ? उदाहरण देकर बताओ ।

VI. लघु और गुरू किसे कहते हैं ?





" सुलझे और दिलचस्प ढंग से व्याकरण तथा रचना का बोध कराने का यह सद्प्रयत्न अभिनन्दनीय है ।"

—शशि भूषण सिंहल,
एम० ए०, पी-एच० डी०
हिन्दी विभाग, जम्मू व काश्मीर विश्व विद्यालय

  

" सरल हिन्दी-विज्ञान पुस्तक माला का यह द्वितीय पुष्प है । प्रथम भाग के समादर ने दूसरे भाग के लिए प्रेरणास्त्रोत का कार्य किया है । पुस्तक की उपादेयता इसी से सिद्ध है ।

लेखक इसके लिए बधाई के पात्र हैं ।"

—बसंती लाल शर्मा
एम० ए०, एम० एड०
प्रोफेसर– पी० जी० बी० टी० कॉलेज
मुरार (ग्वालियर) म० प्र०

  

" I congratulate the writer for writing this book I hope the young student; will find it quite interesting and useful."

B. K. Madan M. A.
Retd. Principal
A S. College, Srinagar,
Kashmir.